केन्द्रीय विद्यालय संगठन
भोपाल संभाग
मैदा मिल के सामने,
भोपाल 462011-
दूरभाष क02550728(उपायुक्त)
2551678(सहायक आयुक्त)
2551699(प्र/0अ0वि(0अ0
फैक्स 25531260755'-:

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
BHOPAL REGION
Opp. Maida Mills,Bhopal-462011
Phone: 2550728 (DC)
2551678 (ACs)
2551699 (AO/FO)
Fax: 0755-2553126
E.Mail:acbhopal@yahoo.com

फा0सं0डी0ओ/2016/केविसं(भोपाल) दिनांक 16/06/2016

प्रिय प्राचार्य गण, (असंतोषजनक परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले 22 के0वि) ई-मेल

असंतोषजनक परीक्षा परिणाम के लिए आपके द्वारा दिए गए प्रासंगिक, संरचनात्मक, आवर्ती एवं आकस्मिक जैसे कारणों से मैं सहमत हूँ । परन्तु शोध निष्कर्षों और अपने अनुभव से मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि विद्यालय समस्या का केन्द्र बिन्दु होता है । विद्यालय का अप्रभावी नेतृत्व इस प्रकार की विषम स्थिति का प्रबल कारक होता है। इस प्रकार का नेतृत्व विद्यार्थियों की प्रदर्शन क्षमता को उन्नत करने में कामयाब नहीं हो सकता। आपका स्पष्टीकरण इस कारण के प्रति मौन है ।

सुधार की रणनीति (जैसे MRAP, Error Analysis & Academic Adoption) पूरी ईमानदारी से लागू न होने के कारण समस्या का एक हिस्सा बने और ऐसी परिस्थितियों का निर्माण हुआ जो विद्यार्थियों की असफलता की गारंटी बनी।

विद्यालयों में स्थायी बदलाव लाने के लिए सर्वप्रथम विद्यालय की विफलता के उन शक्तिशाली कारणों को गहराई से समझने की आवश्यकता है जो सम्मिलित होकर विफलता प्रदान करते हैं । मैं इस बात से पुन: सहमत हूँ कि विद्यालय की विफलता के कुछ कारण बाहरी हैं परन्तु अधिकतर आंतरिक कारण हैं, जिन्हें आप अपने नेतृत्व द्वारा प्रभावित, परिवर्तित एवं पुन: निर्मित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर शिक्षण गुणवत्ता के विभिन्न आयामों में कमी, कक्षा के कार्यसंपादन में कमी, विषय का अपर्याप्त ज्ञान, शिक्षण कौशल में कमी, सीमित शैक्षणिक अनुभव एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा शिक्षण करवाया जाना, शिक्षक के मनोबल में कमी आदि कारण माने जा सकते हैं और इनके समाधान भी निकाले जा सकते हैं। प्रभावी नेतृत्व द्वारा इन समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है। स्वयं के शिक्षण एवं प्रभावपूर्ण नेतृत्व से एक विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

उच्च सामाजिक-आर्थिक विविधता के तत्व एवं पालकों की उंची अपेक्षाओं वाले विद्यालय, पालकों एवं विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों के परस्पर संवाद द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर प्रदान करते हैं। इस तरह के सामाजिक-आर्थिक संरचना वाले विद्यालयों में अक्सर उच्च शैक्षणिक उपलब्धि एवं सफलता से जुड़ी अपेक्षाओं का अभाव होता है । प्रभावी नेतृत्व स्वविवेक द्वारा प्रतिस्पर्धा एवं विकास की भावना पर जोर देकर परिस्थितियों को पलट सकते हैं ।

विद्यालयों के असंतोषजनक प्रदर्शन के कारणों की सूची में प्रभावहीन नेतृत्व के साक्ष्य का प्रमुख स्थान है। दूरदृष्टि एवं शैक्षणिक विशेषज्ञता में कमी, शिक्षण की गुणवत्ता में लापरवाही, स्वयं की शिक्षण में अक्षमता और निर्णय लेने की कमी आदि असफल विद्यालयों के अप्रभावी नेतृत्व की विशेषताएं है। संक्षेप में, असफलता एवं अप्रभावी नेतृत्व के मध्य परस्पर घनिष्ठ संबंध है। यह मुद्दा करिश्मा एवं व्यक्तित्व संबंधी न होकर प्रभावी नेतृत्व से संबंधित है: प्रभावी नेतृत्व मूल रूप से कैसी कार्यप्रणाली अपनाते हैं एवं विद्यालय में कैसा बनाए रखते हैं जिससे सफलता सुनिश्चित होती है।

आपका के0वि उन 22 केन्द्रीय विद्यालयों में से एक है जिन्होंने असंतोषजनक परीक्षा परिणाम दिया। आपके विद्यालय को सही दिशा प्रदान करने, स्टाफ को समुन्नत करने और ऐसी स्थायी स्थितियाँ निर्मित करने जिससे स्थायी सुधार संभव हो, की आवश्यकता है।

आपके विद्यालय की विफलता स्पष्टत: परिलक्षित हो रही है। इस स्तर पर क्रियात्मक शैक्षणिक अनुप्रयोगों की आवश्यकता है । अतिरिक्त शैक्षणिक संसाधन, आपका विशिष्ट अतिरिक्त समय और एक नायक के रूप में आपके कुशल सहयोग से ही विद्यालयों के परिणामों को उन्नत किया जा सकता है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि अप्रभावी नेतृत्व ही विद्यालय के असंतोषजनक परिक्षा परिणामों का मुख्य कारक है । परिणामों की उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियों को कैसे/क्यों/किस प्रकार लागू किया जाना है इसे

प्रभावी ढंग से संप्रेषित नहीं किया जा सका और कर्मचारियों की प्रतिबद्धता भी सही प्रकार से निर्मित नहीं हो सकी। अंतत: परिणाम अपेक्षाओं, आपके द्वारा दी गई जानकारी एवं पुरस्कार के रूप में परिवर्तित नहीं हो सकी ।

निष्कर्षत: यदि आप केन्द्रीय विद्यालय की सफलता के प्रति वास्तव में गंभीर हैं तो आपको अपना अधिक समय देना होगा । सर्वप्रथम विफलता के वास्तविक कारणों, साथ ही विफलता की निरंतरता में शामिल कारकों को खोजन होगा । तत्पश्चात् सफलता की अचूक रणनीति अपने विद्यालय की परिस्थितियों के अनुरूप ढालकर प्रयुक्त करनी होगी । असफलता के कारणों की पूरी बारीकी से जांच एक सुदृढ आधारशिला के निर्माण की दिशा में पहला कदम होगा । इस प्रकार का निदान एक सबल नेतृत्व ही प्रदान कर सकता है ।

कृपया पावती भेजें ।

यह पत्र उपायुक्त महोदय के दिनांक 10.06.2016 के पत्र के हिन्दी रूपांतरण का प्रयास है ।

भवदीया

(डॉ(श्रीमती)बी0कौर)
सहायक आयुक्त

प्रतिलिपि:- 1 सहायक आयुक्त केविसं क्षे0का0भोपाल को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु ।
2 प्राचार्य (उपर्युक्त केन्द्रीय विद्यालयों के अतिरिक्त) केविसं भोपाल संभाग को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु ।